डॉ.पद्मा पाटील
एम.ए.,एम.फिल.,पीएच.डी.
प्रोफेसर एवं अध्यक्ष,
हिंदी विभाग,
शिवाजी विश्वविद्यालय,
कोल्हापुर।

संस्तुति

मैं संस्तुति करती हूँ कि **श्री.शंकर आनंदा पाटील** द्वारा लिखित **"गिरिराज किशोर के 'परिशिष्ट' उपन्यास का अनुशीलन"** लघु शोध-प्रबंध परीक्षणार्थ अग्रेषित किया जाए।

स्थान : कोल्हापुर

तिथि : 30-1-2009

30/01/2009

(डॉ.पद्मा पाटील)
अध्यक्ष,
हिंदी विभाग,
शिवाजी विश्वविद्यालय,
कोल्हापुर-४१६००४.

डॉ.प्रकाश शंकरराव चिकुर्डेकर
एम.ए.,बी.एड, एम.फिल.,पीएच.डी.
वरिष्ठ (श्रेणी), अधिव्याख्याता,
हिंदी विभाग,
यशवंतराव चव्हाण वारणा महाविद्यालय,
वारणानगर, जिला - कोल्हापुर

प्रमाणपत्र

प्रमाणित किया जाता है कि **श्री. शंकर आनंदा पाटील** ने शिवाजी विश्वविद्यालय, कोल्हापुर की एम्.फिल्. (हिंदी) उपाधि के लिए **"गिरिराज किशोर के 'परिशिष्ट' उपन्यास का अनुशीलन"** लघु शोध-प्रबंध मेरे निर्देशन में सफलतापूर्वक पूरे परिश्रम के साथ लिखा है। यह उनकी मौलिक रचना है। पूर्व योजना के अनुसार संपन्न इस शोध कार्य में शोध-छात्र ने मेरे सुझावों का पूर्णत: पालन किया है। जो तथ्य इस लघु शोध-प्रबंध में प्रस्तुत किए हैं, मेरी जानकारी के अनुसार सही हैं। यह रचना इससे पहले शिवाजी विश्वविद्यालय या अन्य किसी विश्वविद्यालय की किसी भी उपाधि के लिए प्रस्तुत नहीं की गई है। प्रस्तुत शोध कार्य के बारे में मैं पूरी तरह संतुष्ट होकर ही इसे परीक्षणार्थ प्रस्तुत करने की अनुमति प्रदान करता हूँ।

स्थान : कोल्हापुर।

तिथि : ३० जनवरी, २००९.

शोध-निर्देशक

(डॉ.प्रकाश शंकरराव चिकुर्डेकर)

प्रख्यापन

मैं प्रख्यापित करता हूँ कि **"गिरिराज किशोर के 'परिशिष्ट' उपन्यास का अनुशीलन"** लघु शोध-प्रबंध मेरी मौलिक रचना है, जो शिवाजी विश्वविद्यालय कोल्हापुर की एम्.फिल. (हिंदी) उपाधि के लिए प्रस्तुत की जा रही है। यह रचना इससे पहले शिवाजी विश्वविद्यालय या अन्य किसी भी विश्वविद्यालय की उपाधि के लिए प्रस्तुत नहीं की गई है।

स्थान : कोल्हापुर।

तिथि : 30-1-2009

शोध-छात्र

(श्री. शंकर आनंदा पाटील)

प्राक्कथन

प्राक्कथन

❖ प्रेरणा एवं विषय चयन :

साहित्य मानव जीवन का दर्पण है। उसमें जीवन की गतिविधियों और क्रिया-व्यापारों का व्यापक रेखांकन होता है। साहित्य की अन्य विधाओं की अपेक्षा उपन्यास विधा मानव जीवन के अत्यंत निकटस्थ है। अत: यह जीवनाभिमुख साहित्य विधा है। छात्र जीवन से ही उपन्यास साहित्य के प्रति मेरी विशेष रुचि रही। स्नातकोत्तर परीक्षा उत्तीर्ण होने के पश्चात् शोध-कार्य के लिए उपन्यास साहित्य की पहल करना स्वाभाविक ही था। मैं चाहता था कि एक सशक्त विषय एम्.फिल. लघु शोध-प्रबंध के लिए चुना जाए। विषय चयन के सिलसिले में मैं निरंतर पढ़ता गया। मेरे हाथ हिंदी के प्रतिष्ठित साहित्यकार गिरिराज किशोर की रचनायें आयी तो मैं पूर्णत: उनके साहित्य की ओर आकृष्ट हुआ। समकालीन उपन्यास साहित्य के एक सशक्त रचनाकार के रूप में गिरिराज किशोर का अपना अलग स्थान है। बीसवीं सदी के अंतिम चार दशकों से लेकर आज तक उन्होंने अपनी मौलिक रचनाओं से साहित्य को समृद्ध किया।

गिरिराज किशोर के उपन्यासों का अध्ययन करते समय मेरे ध्यान में आया कि उन्होंने विविध विषयों पर लेखन किया है। अनेक अछूते विषयों को उन्होंने पहली बार लोगों के सामने लाने का प्रयास किया। गिरिराज किशोर के उपन्यासों ने मुझे प्रभावित किया और अनुसंधान के लिए उनके उपन्यासों पर कार्य करने का मैंने संकल्प किया। श्रद्धेय गुरुवर्य डॉ.प्रकाश चिकुर्डेकर जी से शोध विषय के संदर्भ में विचार विमर्श किया और आपके सुझावों के अनुसार लघु शोध-प्रबंध के लिए **"गिरिराज किशोर के 'परिशिष्ट' उपन्यास का अनुशीलन"** विषय का चयन किया।

❖ **अनुसंधान के प्रारंभ में मेरे मन में निम्नांकित प्रश्न उपस्थित हुए थे -**

1 गिरिराज किशोर की साहित्यिक पहचान क्या है?

2 विवेच्य उपन्यास का केंद्रीय विषय कौन-सा है?

3 दलित लोगों का भारतीय समाज जीवन में क्या स्थान है?

4 प्रकृति घृणामुक्त है तो मनुष्य मुक्त क्यों नहीं?

5 शिक्षा व्यवस्था क्यों विषाक्त हो चुकी है?

6 विवेच्य उपन्यास में कौन-कौन सी समस्याओं का चित्रण हुआ है?

7 विवेच्य उपन्यास की भाषा-शैली किस प्रकार की है?

प्रस्तुत उपन्यास के अध्ययन के उपरांत उक्त प्रश्नों के जो उत्तर प्राप्त हुए हैं उन्हें उपसंहार में दर्ज किया है।अध्ययन की सुविधा हेतु मैंने लघु शोध-प्रबंध को निम्नांकित अध्यायों में विभाजित करके प्रस्तुत शोध-विषय का विवेचन-विश्लेषण किया है -

❖ **प्रथम अध्याय – "गिरिराज किशोर : व्यक्ति एवं साहित्य"**

प्रस्तुत अध्याय के अंतर्गत गिरिराज किशोर के जीवन तथा साहित्य का परिचय दिया है। जीवन परिचय के अंतर्गत उनका जन्म, माता-पिता, दादाजी, बचपन, शिक्षा, नौकरी तथा व्यवसाय, वैवाहिक जीवन, लेखन कार्य तथा व्यक्तित्व की विशेषताएँ आदि पर प्रकाश डाला है। साहित्य परिचय के अंतर्गत उनकी साहित्यिक विशेषताएँ के साथ विभिन्न विधाओं के लेखन संबंधी संक्षिप्त परिचय दिया है। साथ ही विदेश यात्राएँ, सम्मान एवं पुरस्कार का परिचय प्रस्तुत किया है। अध्याय के अंत में उपलब्ध तथ्यों के आधार पर निष्कर्ष दर्ज किए हैं।

❖ **द्वितीय अध्याय - " 'परिशिष्ट' उपन्यास का परिचयात्मक विवेचन"**

प्रस्तुत अध्याय के अंतर्गत मैंने कथावस्तु का स्वरूप, विवेच्य उपन्यास की

कथावस्तु, उच्च शिक्षा संस्थानों में दलितों पर होते अन्यायों का जीवंत दस्तावेज आदि बातों का परिचयात्मक विवेचन-विश्लेषण प्रस्तुत किया है। अध्याय के अंत में उपलब्ध तथ्यों के आधार पर निष्कर्ष दर्ज किए हैं।

❖ **तृतीय अध्याय - " 'परिशिष्ट' उपन्यास में चित्रित दलित जीवन"**

प्रस्तुत अध्याय में मैंने दलित शब्द का तात्पर्य, परिभाषा, अर्थ, हिंदी उपन्यासों में चित्रित दलित जीवन, दलितों की वर्तमान स्थिति आदि को स्पष्ट किया हैं। साथ ही विवेच्य उपन्यास में चित्रित दलित जीवन के अंतर्गत दलितों की परंपरागत मान्यताएँ, धर्म के संबंधी दृष्टिकोण, हीनता की भावना, आर्थिक स्थिति, रहन-सहन, अंधविश्वास, व्यसनाधीनता दलितों में भेदभाव, छुआछूत, शिक्षा, राजनीतिक स्थिति आदि बातों का विवेचन-विश्लेषण प्रस्तुत किया है। अध्याय के अंत में उपलब्ध तथ्यों के आधार पर निष्कर्ष दर्ज किए हैं।

❖ **चतुर्थ अध्याय - 'परिशिष्ट' उपन्यास में चित्रित शिक्षा व्यवस्था**

प्रस्तुत अध्याय के अंतर्गत मैंने शिक्षा व्यवस्था का अर्थ, प्राचीन, मध्यकालीन और आधुनिक भारतीय शिक्षा व्यवस्था पर प्रकाश डाला है। विवेच्य उपन्यास में चित्रित शिक्षा व्यवस्था के अंतर्गत प्रशासन, व्यवस्थापन, अध्यापक, छात्र, परीक्षा व्यवस्था, छात्रावास आदि बातों का विवेचन-विश्लेषण किया हैं। अध्याय के अंत में उपलब्ध तथ्यों के आधार पर निष्कर्ष दर्ज किए हैं।

❖ **पंचम अध्याय – " 'परिशिष्ट' उपन्यास में चित्रित समस्याएँ"**

प्रस्तुत अध्याय के अंतर्गत मैंने विवेच्य उपन्यास में चित्रित समस्याओं को स्पष्ट किया हैं। इस अध्याय में नारी शोषण की समस्या, अंधविश्वास की समस्या, व्यसनाधीनता की समस्या, बालविवाह की समस्या, छुआछूत की समस्या, आरक्षण की समस्या, जातीयवाद की समस्या, आर्थिक अभाव की समस्या, शिक्षा के प्रति अनास्था की

समस्या, शिक्षा क्षेत्र में मूल्यों का विघटन तथा भ्रष्टाचार की समस्या, शिक्षा क्षेत्र में राजनीति की समस्या, रैगिंग की समस्या, धन के लालच की समस्या, आत्महत्या की समस्या आदि समस्याओं का विवेचन-विश्लेषण किया है। अध्याय के अंत में उपलब्ध तथ्यों के आधार पर निष्कर्ष दर्ज किए हैं।

❖ षष्ठ अध्याय - "'परिशिष्ट' उपन्यास : भाषा-शैली का मूल्यांकन"

प्रस्तुत अध्याय के अंतर्गत मैंने संस्कृत के तत्सम, तद्भव शब्दों के साथ अरबी, फारसी, अंग्रेजी, तुर्की, उर्दू शब्दों का तथा मुहावरें, कहावतें, सूक्तियाँ, अपशब्दों आदि भाषा प्रयोगों का और पत्रात्मक शैली, मनोविश्लेषणात्मक शैली, व्यंग्यात्मक शैली, स्वप्न शैली, आत्मकथनात्मक शैली, वर्णनात्मक शैली, संवाद शैली, टेलीफोन शैली आदि शैलियों का विवेचन-विश्लेषण प्रस्तुत किया है। अध्याय के अंत में उपलब्ध तथ्यों के आधार पर निष्कर्ष दर्ज किए हैं।

अंत में 'उपसंहार' के रूप में इस लघु शोध-प्रबंध का सार रूप दिया है। इसमें पूर्ण विवेचित अध्यायों के प्राप्त तथ्यों के आधार पर निकाले गए निष्कर्ष को दिया गया है। इसके उपरांत संदर्भ ग्रंथ-सूची दी है।

❖ उपसंहार :

अंत में 'उपसंहार' के रूप में इस लघु शोध-प्रबंध का सार रूप दिया है। इसमें पूर्व विवेचित अध्यायों के प्राप्त तथ्यों के आधार पर निकाले गए निष्कर्ष को दिया गया है। इसके उपरांत संदर्भ ग्रंथ-सूची दी है।

❖ शोध पद्धति :

प्रस्तुत अनुसंधान पूर्ति हेतु प्रमुखत: सर्वेक्षणात्मक, विवेचनात्मक, विश्लेषणात्मक, वर्णनात्मक पद्धति का उपयोग किया है।

❖ प्रयुक्त साधन :

प्रस्तुत शोध-कार्य पूर्ति के लिए विवेच्य उपन्यास, संदर्भ ग्रंथ, आलोचनात्मक ग्रंथ, पत्र-पत्रिकाओं के साथ ही इंटरनेट आदि अन्य साधनों का प्रयोग किया है।

❖ प्रस्तुत लघु शोध-प्रबंध की मौलिकता :

1 प्रस्तुत लघु शोध-प्रबंध 'परिशिष्ट' उपन्यास के अनुशीलन पर केंद्रित है, जो पहली बार अलग रूप में संपन्न हुआ है।

2 प्रस्तुत लघु शोध-प्रबंध में गिरिराज किशोर के व्यक्तित्व एवं साहित्य का समग्र लेखा-जोखा प्रस्तुत किया है।

3 प्रस्तुत लघु शोध-प्रबंध में देश की वर्तमान तकनीकी शिक्षा व्यवस्था का यथार्थता से रेखांकन हुआ है।

4 प्रस्तुत लघु शोध प्रबंध में उच्च शिक्षा संस्थान और दलित जीवन का लेखा-जोखा प्रस्तुत कर व्यवस्था का कटु सत्य विशेष रूप से उजागर किया है।

5 प्रस्तुत लघु शोध-प्रबंध में विवेच्य उपन्यास की भाषा-शैली का अध्ययन किया है।

कृतज्ञता

कृतज्ञता

प्रस्तुत लघु शोध-प्रबंध की पूर्ति में मेरी प्रत्यक्ष और अप्रत्यक्ष रूप से सहायता करनेवाले हितैषियों का स्मरण करना आवश्यक ही नहीं तो अनिवार्य है। अत: उनके प्रति आभार प्रकट करना मैं अपना आद्य कर्तव्य मानता हूँ।

प्रस्तुत लघु शोध-प्रबंध श्रद्धेय गुरुवर्य डॉ.प्रकाश चिकुर्डेकर जी के कुशल निर्देशन में संपन्न हुआ है। आपकी शिष्यवत्सलता और प्रेरणापूर्ण निर्देशन के अभाव में यह कार्य मेरे लिए असंभव होता। आपके मौलिक विचारों से मैं हमेशा लाभान्वित हुआ हूँ। लाख कृतज्ञता ज्ञापित करने पर भी आपके ऋण से मैं मुक्त नहीं हो सकता। आपके स्नेह, निर्देशन और आशीर्वाद से और भी लाभान्वित होने की मनोकामना करता हूँ। साथ ही आपके परिवारजनों से भी सदैव आत्मीयता मिलती रही। अत: इन सभी का मैं ऋणी हूँ।

प्रस्तुत शोध-कार्य के दौरान हमेशा प्रेरणा, मार्गदर्शन और प्रोत्साहन मिलता रहा है वे जेष्ठ समीक्षक प्रो.डॉ.अर्जुन चव्हाण जी, प्रो.डॉ.पद्मा पाटील जी, डॉ.शोभा निंबाळकर जी आदि का इस अनुसंधान कार्य में महत्त्वपूर्ण सहयोग रहा है। भविष्य में भी ऐसा सहयोग मिलता रहे यही आपसे कामना करता हूँ। श्री.संत गाडगेबाबा महाविद्यालय, कापशी के प्राचार्य डॉ.जे.एस. पाटील जी, हिंदी विभागाध्यक्ष नंदकुमार रानभरे जी, ग्रंथपाल एम.जी.पाटील जी, सभी अध्यापक, अध्यापिका एवं कर्मचारीवृंद आदि का सदैव प्रोत्साहन मिलता रहा। अत: आप सभी के प्रति हृदय से कृतज्ञता ज्ञापित करता हूँ।

बचपन से लेकर आज तक मेरी शिक्षा का असहनीय भार उठानेवाले आदरणीय माता-पिता के आशीर्वाद के कारण ही मैं इस मुकाम तक पहुँच सका हूँ।

उनका स्नेह और आशीर्वाद सदैव मेरे साथ बना रहे यही ईश्वर से कामना करता हूँ। छोटे भाई शिवाजी, तानाजी ने समय-समय पर मेरी सहायता की तथा पढ़ाई के लिए सदा प्रोत्साहित किया। अत: इन सभी के ऋण से मुक्त होना मेरे लिए नामुमकिन है। अत: आपके ऋण में सदा ही रहना पसंद करूँगा।

मेरे जीवन में मुझे सदा प्रोत्साहित करनेवाले, अपेक्षा से ज्यादा प्यार करनेवाले मेरे सभी दोस्त तथा एम्.फिल. कक्षा के सभी साथी और सहेलियों का सहयोग मेरे लिए बल स्वरूप रहा। अत: उनके भविष्य के प्रति शुभकामनाएँ प्रकट कर उनके प्रति भी शुक्रिया अदा करता हूँ।

प्रस्तुत लघु शोध-प्रबंध के लिए आवश्यक संदर्भ ग्रंथों की प्राप्ति मुझे बाळासाहेब खर्डेकर, ग्रंथालय कोल्हापुर तथा श्री संत गाडगेबाबा महाविद्यालय, कापशी से हुई। इन ग्रंथालयों के सभी कर्मचारियों का सहयोग भी महत्त्वपूर्ण रहा है। अत: मैं इन सभी का ऋणी हूँ।

इस लघु शोध-प्रबंध को आकर्षक एवं यथोचित रूप में टंकन करनेवाले 'अविज् कॉम्प्युटर्स ' के संचालक अविनाश, अरूण का भी मैं आभारी हूँ। साथ ही जिन ज्ञात-अज्ञातों की शुभकामनाएँ मुझे प्राप्त हुई है उन सब के प्रति आभार प्रकट करते हुए इस लघु शोध-प्रबंध को अत्यंत विनम्रता से विद्वानों के सामने परीक्षणार्थ प्रस्तुत करता हूँ।

शोध-छात्र

(श्री. शंकर आनंदा पाटील)

स्थान : कोल्हापुर

तिथि : 30-1-2009